तरबीयत व इस्लाह

शैख मुहम्मद इशाक मुलतानी.

नोट: आप से दरखास्त है की इसे
भाषा या ग्राम्मर का अदब ना समझे.

बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहिम

हजरत हसन और हूसेन (रदी) की समझदारी

हजरत हसन और हूसेन (रदी) ने एक मरतबा दरियाए फुरात के किनारे एक बुढे देहाती को देखा कि उसने बहुत जल्दी जल्दी वुजु किया, और इसी तरह जल्दी जल्दी नमाज पढी और जल्दबाजी मे वुजु और नमाज के मसनुन तरिको मे कोताही हो गयी, दोनो हजरात उसे समझाना चाहते थे, लेकिन उन्हे अन्देशा हुवा कि ये बडी उमर के आदमी हे कही अपनी गलती सुन कर नाराज़ ना हो जाये, चुनांचे दोनो हजरात उस्के करीब पहुचे और कहा हम दोनो जवान हे और आप तजरूबेकार आदमी हे आप वुजु और नमाज का तरीका हम से बेहतर जानते होगे, हम चाहते हे कि आप को वुजु करके

नमाज पढ कर दिखाये अगर हमारे तरीके मे कोई गलती या कोताही हो तो बता दिज्ये, इसके बाद उन्होने सुन्नत के मुताबिक वुजु करके नमाज पढी बुढे ने देखा तो अपनी कोताही से तौबा की और आइन्दा से ये तरीका छोड दिया.

तरबीयत का एक गुर

शेख अब्दुल वहाब शारानी (रह) फरमाते औलाद की तरबीयत के बारे तफविज से काम लेना चाहिये, तफविज का ये मतलब नही कि मेहनत छोड दो, बल्की असबाब और मेहनत से नजर हटा कर अल्लाह पर नजर करो, बहुत सी मरतबा वालीदेन औलाद को सुधारने की कोशिश करते हे, उस्के बावजूद औलाद नही सुधरती, बल्की और ज्यादा बिगडती चली जाती हे, जबकि कुछ वालीदेन औलाद पर कोई कायदा और पकड नही रखते, बिलकुल आजाद छोड देते हे, इसके बावजूद औलाद नेक बन जती हे.

शैतान ऐसे वाकीयात से अवाम को धोका देकर इस तरह गुमराह करता हे कि औलाद पर पाबन्दी नही रखनी चाहिये, आजाद छोड देना चाहिये, ये शैतान का धोका हे, हम तो अल्लाह के बन्दे हे, बन्दे का काम हे कि मालिक के हुकम को पुरा करे, वो लोग

जो औलाद को सुधारने और उनकी तरबीयत की कोशिश नही करते आजाद छोड देते हे अल्लाह के नजदीक बडे मुजरिम हे, उनकी औलाद केसी ही सुधर जाये, तो भी वालीदेन पर फर्ज अदा ना करने की वजह से पकड होगी.

एक पहलवान की इस्लाह

मौलाना मुझफ्फर हुसेन कान्धलवी (रह) ने देखा की एक पहलवान मस्जीद मे आया और गुस्ल करना चाहता था मुअजिन ने उसको डांटा और कहा कि ना नमाज के ना रोजे के मस्जीद मे नहाने के लिये आ जाते हे, मौलाना ने मुआअजिन को रोका और खुद उस्के नहाने लिये पानी भरने लगे, और उससे फरमाया माशाअल्लाह तुम तो बडे पहलवान हो, और बहुत अच्छी पहलवानी कर लेते हो, जरा अपने नफस के मामले मे भी तो अपना जोर दिखाओ, नफस को दबाया करो और हिम्मत करके नमाज पढ लिया करो, असल पहलवानी तो ये हे, इतना सुनना था कि वो शर्म से पानी पानी हो गया, और इस नरम गुफ्तगु का उस पर ये असर हुवा कि वो उसी वकत से नमाज का पाबंद हो गया.

फायदा- कुछ लोगो पर नरमी का असर जियादा होता हे और सख्ती से वो दीन से बे-जार हो जाते हे,

इस लिये लोगो के मिजाज को सामने रखते हुए बात करनी चाहिये.

अंदाजे तब्लीग

एक दिन देवबंद के एक साहिब ने आकर मौलाना हुसैन अहमद मदनी (रह) के सामने अपनी जरूरत का इजहार किया और कुछ रकम मांगी हजरत मदनी ने फौरन ही पांच रूपये उसको दे दीये किसी ने अर्ज़ किया कि हजरत ये शख्स तो उल्मा को गालिया देता है आपने फरमाया इसी वजह से तो मैने उसको रूपये दिये हे ताकी उसको ख्याल होगा के उल्मा को गालिया नहीं देनी चाहिये.

दांत तोडने वाला जवाब

कलकत्ता मे एक नास्तिक ने मौलाना शहीद देहलवी से कहा था गोर करने से ये मालूम होता हे कि दाढी रखना फितरत के खिलाफ हे, क्यूके अगर ये फितरत के मुवाफिक होता तो इनके पेट से पेदा होते वकत भी दाढी होती,

मौलाना शहीद ने फरमाया कि अगर फितरत के खिलाफ होने की यही वजह हे तो दांत भी तो फितरत के खिलाफ हे, इनको भी तोड दो, क्यूके मां के पेट से पेदा होते वकत दांत भी ना थे. (अम्साले इबरत).

हवाला: एक हज़ार अनमोल मोती उर्दु से मज़मून का खुलासा लिप्यान्तरण किया गया हे.